विकास की अवधारणा

-दत्तोपंत ठेंगड़ी

विकास की अवधारणा

श्री दत्तोपंत ठेंगड़ी
अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद

43वां राष्ट्रीय अधिवेशन
चेन्नई
25 से 28 दिसंबर 1997

विकास की अवधारणा

यह एक सामान्य मिथ्या धारणा है कि विकास की अवधारणा हाल ही की है, और यह द्वितीय विश्व युद्ध के बाद प्रारंभ की गई। हालांकि यह सच है कि प्रगति के विचार, जिसे विकास का पर्याय माना गया, के पहले प्रसिद्ध प्रणेता एक फ्रांसीसी दार्शनिक कॉन्डोरसेट (1743–94) थे। लेकिन सच्चाई यह है कि विकास का विचार उतना ही पुराना है, जितनी मानव की सोच की प्रक्रिया पुरानी है। डार्विन ने अपने सिद्धांत के माध्यम से पता लगाया कि इस ग्रह में जीवन के प्रारंभ से ही विकास की प्रक्रिया शुरू हो गई थी।

यूरोप का इतिहास देखें तो ग्रीक शहरों के शुरूआती काल के दौरान, सुकरात, प्लेटो और अरस्तु का क्या लक्ष्य थे? हालांकि देश काल और परिस्थितियों के अनुसार प्रयासों की प्रकृति बदलती रही, लेकिन परिस्थितियों की जरूरतों के अनुसार विकास के लिए प्रयास कभी नहीं रूके। सम्पूर्ण परिदृश्य पर यदि सरसरी दृष्टि डालें तो देखते हैं कि प्राचीन रोम से लेकर प्राचीन ग्रीस तक, मध्यकाल, इतालवी पुनर्जागरण, जर्मन सुधार, भौगोलिक खोजों और विदेशों में विस्तार, पश्चिमी यूरोप में राष्ट्रों का उदय, वैज्ञानिक क्रांति और प्रबुद्धता, लोकतांत्रिक क्रांतियों का काल और क्रांति के बाद का यूरोप, और 1945 के बाद का यूरोप ये सभी निरंतर विकास के प्रयासों के उदाहरण हैं। हर कालखंड में हम महान मानवतावादी विचारकों को देखतें हैं जिनके जीवन का एकमात्र उद्देश्य विकास ही था, चाहे यह विशेष पारिभाषिक शब्द चलन में नहीं था। विभिन्न धर्मों एवं 'वादों' के प्रणेताओं को किससे प्रेरणा मिलती थी? ई.पू. 509 की रोमन क्रांति से आधुनिक विद्रोहों तक, सभी क्रांतियों की प्रेरणा के बारे में चे गुएवारा और फ्रायर ने स्पष्ट किया है। क्रांतिकारियों की मौलिक प्रेरणा समान थी। समान उद्देश्यों को दृष्टि में रखते हुए प्रजातंत्र के समर्थकों ने विभिन्न यूरोपीय देशों में संवैधानिक संघर्ष शुरू किया।

आश्चर्यजनक सच्चाई है कि चाहे सामान्यतः सम्राट स्वकेन्द्रित और जनविरोधी होते थे, उनमें से कुछ ने यह सुनिश्चित करने के लिए विशेष प्रयास किए कि उनकी प्रजा उस प्रक्रिया में, जिसे आज 'विकास' कहते हैं, से लाभांवित हो सके। पीटर महान, फ्रेडेरिक महान और चार्ल्स महान (चार्ल्समैग्ने) ऐसे प्रबुद्ध शासक रहे।

संक्षेप में कह सकते हैं कि विकास एक पारिभाषिक शब्द चाहे जून 1945 के बाद चलन में आया, लेकिन इसका मूल विचार जीवन जितना ही पुराना है।

पश्चिमी सोच के साथ कठिनाई यह है कि यह हमेशा भागों में बटी हुई और खंडित रही है। हमारी सोच सदैव एकात्म एवं समग्र रही है। पश्चिम को हमेशा लगता है कि आर्थिक समस्याओं का समाधान सदैव अर्थशास्त्र के अध्ययन के माध्यम से और राजनीतिक समस्याओं का समाधान राजनीतिक विज्ञान के अध्ययन से ही हो सकता है। यह एकतरफा सोच है। किसी आर्थिक समस्या का सही निदान और उसको ठीक करने के उपयुक्त उपायों का विचार, विभिन्न गैर आर्थिक कारकों को साथ में संज्ञान में लिए बिना नहीं हो सकता। चाहे वह राजनीतिक, सामाजिक अथवा सांस्कृतिक क्षेत्र हो, यह बात सभी क्षेत्रों पर लागू होती है। आर्थिक समस्याओं में गैर आर्थिक कारकों के संज्ञान के महत्व को कम नहीं आंका जा सकता। उदाहरण के लिए 'सामाजिक कारकों' के बारे में एलटी हॉबहाउस निम्न टिप्पणी करते हैं।

यदि हम संपूर्ण सामाजिक कारक को हटा दें और हमें मलबे में उसकी रक्षित संपत्ति और अर्जित ज्ञान के साथ, लेकिन एक नग्न व्यक्ति जो कंद–मूल, बेर और लूट पर आश्रित व्यक्ति रॉबिन्सन क्रूसो मिलेंगे। मानव कल्याण पर विचार करते समय, गेर–आर्थिक भौतिकवादी कारकों को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। उदाहरण के लिए इस देश की भौगोलिक स्थित, इसकी जलवायु, नदियां, पहाड़, प्राकृतिक बंदरगाह, शांति और सुरक्षा, या देश के प्राकृतिक संसाधन जैसे भूमि, जल, जंगल, खनिज संसाधन, कृषि क्षमता (दूसरे देशों में सामान्य विकास), आदि।

इसलिए गैर आर्थिक भौतिक कारकों जिनका मौद्रिक आंकलन नहीं हो सकता, की भी इस संदर्भ में अपनी एक भूमिका है।

लेकिन यही सबकुछ नहीं है। डेविड मारकोड राइट अपनी पुस्तक 'ओपन सीक्रेट ऑफ इक्नॉमिक ग्रोथ' में कहते हैं कि ''आर्थिक संवृद्धि को लाने वाले मौलिक कारक, गैर आर्थिक और गैर भौतिक स्वरूप के होते हैं। यह वो आत्मा है जो शरीर का निर्माण करती है।''

पश्चिमी और हिन्दू दोनों प्रकार के विचारों के बीच इस बड़े अंतर को संज्ञान में लेना आवश्यक है।

पश्चिमी	**हिन्दू**
भागों में बटी हुई सोच	एकात्म सोच
मनुष्य– मात्र एक भौतिक जीव	मनुष्य– एक शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक–आध्यात्मिक अस्तित्व
अर्थ और काम की गुलामी	पुरूषार्थ चतुष्टयम् की ओर प्रयास
समाज स्वकेन्द्रित व्यक्तियों का एक क्लब	समाज एक ऐसा शरीर जिसमें सभी मनुष्य उसके भाग हों
स्व की खुशी	सब की खुशी
परिग्रह	अपरिग्रह (गैर आधिपत्य)
लाभ का उद्देश्य	सेवा का उद्देश्य
उपभोक्तावाद	संयमित उपभोग
शोषण	अंत्योदय
दूसरों के कर्तव्य और अपने अधिकारों के प्रति सजगता	अपने कर्तव्यों और दूसरों के अधिकारों के प्रति सजगता
अल्पता का भाव	उत्पादन की प्रचुरता
विभिन्न उपकरणों' के माध्यम से एकाधिकारिक पूंजीवाद	बाजारों में हेरफेर बिना मुक्त प्रतिस्पर्धा
मजदूरी रोजगार केंद्रित आर्थिक सिद्धांत	स्वरोजगार केंद्रित आर्थिक सिद्धांत
सर्वहारा की लगातार बढ़ती फौज	लगातार बढ़ता विश्वकर्मा (स्वरोजगार) क्षेत्र
लगातार बढ़ती असमानताएं	गुणवत्ता के साथ समानता एवं बराबरी की ओर बढ़ना
प्रकृति का बलात्कार	प्रकृति माता का दोहन
व्यक्ति, समाज एवं प्रकृति के बीच निरंतर संघर्ष	व्यक्ति, समाज और प्रकृति के बीच पूर्ण सामंजस्य'

उदाहरण के लिए एजेंटो, ब्रांडों, कॉपी राईट, ट्रेड मार्क, लाईसेंस, कोटा, संरक्षणात्मक आयात शुल्क, कार्टेल, एकत्रीकरण, ट्रस्ट, होल्डिंग कंपनियां या अंतरनिगमीय निदेशक मंडल, अंतरनिगमीय निवेश इत्यादि।

ये दोनों पूर्णतया अलग विचार हैं। प्रत्येक समाज 'सभी लो या सभी छोड़ो' के आधार पर इन दोनों में से चयन करने के लिए स्वतंत्र है।

संयुक्त राष्ट्र ने पहली बार इस समस्या का संज्ञान 1951 में एक रिपोर्ट द्वारा लिया, जिसमें अल्पविकसित देशों के विकास के बारे में सोचा गया था। इस प्रकार से यह एक बड़ा मील का पत्थर था। संयुक्त राष्ट्र की इस रिपोर्ट को तैयार करने में डॉ. डी.आर. गाडगिल जुड़े हुए थे।

डॉ. गाडगिल को इस समस्या का सही ज्ञान था। दुर्भाग्य से इस विषय में स्वच्छंद पश्चिमी विचार से अभिभूत पंडित नेहरू सदैव की भांति विकास के बारे में पश्चिमी विचार के प्रभाव में आ गये। दुर्भाग्य से डॉ. गाडगिल पंडित नेहरू को अपनी इस जमीन से जुड़ी विचार प्रक्रिया के बारे में राजी नहीं कर पाये।

विकास का अर्थशास्त्र, कई अवधारणाओं को संवृद्धि या ग्रोथ के सिद्धांतों से लेता है। दुर्भाग्य से हमारे अर्थशास्त्री पश्चिमी पद्धतियों का अंधानुकरण करते हैं। वे हमारी परिस्थितियों के अनुरूप संवृद्धि सिद्धांत विकसित करने में सक्षम हैं। लेकिन वे स्वयं की सोच न मानने की हठ पर अड़े हुए हैं। वे पश्चिमी सिद्धांतों से इतने अभीभूत हैं कि जब वे किसी एक सिद्धांत से विमुख हो जाते हैं तो वे स्वयं की बुद्धि का उपयोग किये बिना, पश्चिम के किसी दूसरे सिद्धांत की खोज में दौड़ने लगते हैं। वे स्वीकार कर सकते हैं कि मार्क्स के साथ–साथ जे.एस. मिल, रिचर्ड और माल्थस सभी पुराने हो गये हैं। वे चाहे वर्तमान परिस्थितियों में अल्फ्रेड माशर्ल, विकसेल, गुनार, मार्यडल और केन्स की प्रासंगिकता के बार में संदेहशील हो सकते हैं, लेकिन वे अपनी स्वतंत्र सोच विकसित करने के लिए तैयार नहीं है। इसके बजाए वे प्रो. रॉस्टौ के आर्थिक संवृद्धि के पांच स्तरों की चर्चा में व्यस्त हो जाते हैं कि क्या हम आर्थिक संवृद्धि के तीसरे स्तर 'उड़ान' पर पहुंच गये हैं ताकि हम चौथे स्तर 'परिपक्वता' की ओर जा सकते हैं, जिससे पांचवें स्तर 'उच्च्य उपभोग' की ओर अग्रसर हो सकें।

हम वही पश्चिमी संवृद्धि के मॉडलों का अनुकरण कर रहे हैं, चाहे पश्चिमी देशों के लोग उनकी अनुपयुक्तता को समझ रहे हैं। उदाहरण के लिए पिछले वर्ष संयुक्त राष्ट्र की मानव विकास पर रिपोर्ट

ने स्वीकार किया है कि हमने अभी तक जो संवृद्धि हासिल की है वह रोजगारविहीन संवृद्धि है, निर्दयी संवृद्धि है, हिसंक संवृद्धि है और भविष्यविहीन संवृद्धि है।

लेकिन रिपोर्ट के प्रकाशित होने के तुरंत बाद ही संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम के अध्यक्ष जिनके मार्गदर्शन में वह रिपोर्ट लिखी गई थी, को त्याग पत्र देने को कहा गया और इस वर्ष प्रकाशित होने वाली रिपोर्ट में इन बातों का कोई जिक्र भी नहीं है।

लेकिन उनका यह शतुरमुर्ग जैसा रवैया केवल यही दर्शाता है कि उनके संवृद्धि के मॉडल असफल हो चुके हैं। उनके मॉडलों के असफल होने के प्रमुख कारण क्या रहे?

उनका उद्देश्य कुछ लोगों के लिए भौतिक समृद्धि है, सभी के लिए खुशी नहीं। कुछ लोगों के लिए ही अधिकतम लाभ। स्वभाविक रूप से उनके मापदंड शुद्ध रूप से भौतिक हैं— जीडीपी, जीएनपी, राष्ट्रीय संपदा, राष्ट्रीय आय, भुगतान शेष स्थिति इत्यादि। लेकिन वे मुद्रा स्फीति और बेरोजगारी की समस्याओं के बारे में रत्ती भर भी चिंतित नहीं है।

क्या यह शुद्ध भौतिक अवधारणा पर्याप्त है? क्या यह उन कुछ लोगों के लिए भी खुशी ला सकते हैं, जो उनके पक्षकार हैं। एक व्यक्ति की खुशी में उसकी हर स्तर की खुशी शामिल होती है — भौतिक, मानसिक, बौद्धिक और अध्यात्मिक। भौतिक समृद्धि से भौतिक सुख प्राप्त हो सकता है, हालांकि वह भी संदिग्ध है। मानसिक, बौद्धिक और अध्यात्मिक सुख भौतिकता के अधिकार क्षेत्र से परे है, तो विकास क्या 80 प्रतिशत लोगों की कीमत पर, कुछ लोगों के भौतिक समृद्धि के लिए होगा। भौतिकता के विचार से भी कुछ देशों की प्रधानता वाले 'गैट' वार्ताओं के प्रावधान से यह अवधारणा कपटपूर्ण हो गई है।

पहले चरण में क्यों इस एकतरफा अवधारणा को विकास मान लिया गया? बहाना यह दिया गया कि व्यक्ति की गैर भौतिक खुशी को मुद्रा के मानक के रूप में मापना संभव नहीं है। यह तो घोड़े के आगे गाड़ी रखने के समान है। भौतिक संवृद्धि के सूचकांकों का इस संदर्भ में कोई महत्व नहीं है। लेकिन इसके लिए अलग प्रकार की कार्यपद्धति हो

सकती है, और यह हमारे देश में पतांजली जैसे विचारकों द्वारा वैज्ञानिक रूप से विकसित की गई है। हमारा मानवीय विकास के संदर्भ में संतुलित एवं व्यापक दृष्टिकोण रहा है, जो क्षम रूप से मानवीय खुशी की ओर लेकर के जाता है।

भौतिक संवृद्धि (समुत्कर्ष) के साथ अध्यात्मिक उत्थान (निसर्व), दोनों एक सिक्के के दो पहलू हैं और दोनों को मिलाकर महर्षि व्यास द्वारा प्राभव घोषित किया गया।

प्रभावार्थे हि भूतानां धर्मं प्रवचनं कृतम् ।
यः स्यात् प्रभावसंयुक्तः स धर्मः इति निश्चयः।।

जीवों की भौतिक एवं आध्यात्मिक प्रगति के लिए धर्म का आचरण बताया जाता है। भौतिक एवं आध्यात्मिक प्रगति के साथ जो होना चाहिए, वह वास्तव में धर्म है।

विभिन्न मंचों पर विचारकों ने इस विषय का व्यवहार किया है। यहां यह कहना पर्याप्त है कि सदियों के अनुभव के बाद हमारी कार्यप्रणाली आजमायी और परखी हुई है। इसलिए यह मान्य नहीं है कि जो मुद्रा के रूप में मापा नहीं जा सकता, उसे विकास की परिभाषा में शामिल नहीं किया जाना चाहिए।

वास्तविकता यह है कि आज विकास की परिभाषा को अंतर्राष्ट्रीय षड्यंत्रकारियों द्वारा अपने कुटिल इरादों को आगे बढ़ाने के लिए उपयोग किया जा रहा है। इस फरेब को स्वदेशी जागरण मंच द्वारा निर्णायक रूप से उजागर किया गया है। इसलिए बिना विस्तार में जाए, आईए यह जानें कि संबद्ध देशों पर 'विकास' का प्रभाव किस प्रकार से हो सकता है।

हर संस्कृति का अपना एक मॉडल होता है। अन्य सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से लाए गए या निहित विदेशी स्वार्थी तत्वों द्वारा थोपे गए विकास का मॉडल विनाशकारी हो सकता है। प्रसिद्ध लेखक एवं 'टूवर्डस ए हिस्ट्री ऑफ निड्स', 'मेडिकल नेमेसिस', 'टूल्स फॉर कॉनविविएलिइटी एंड डिस्कूलिंग सोसाईटी' आदि पुस्तकों के रचयिता ईवान इलिच, विकास के मिथक के अपने मैक्सिको के अनुभव को बयान

करते हैं। वे मैक्सिको के लिए विकास का क्या मतलब है, को इस नजरिए से नहीं देखते कि जहां विकास की योजनाएं कैसे बनती है, और उनके कार्यान्वयन की समीक्षा कैसे होती है, न ही वे अफसरशाही एवं तकनीशियनों द्वारा बनाए गए सांख्यिकीय और सैद्धांतिक सूचकांको के सबूतों के आधार पर विकास का आकलन करते हैं, बल्कि वे इसे इस नजरिए देखतें हैं कि ग्रामीण क्षेत्रों एवं स्लमों में रहने वाले गरीबों की पारंपरिक कौशल एवं जीवनयापन के साधनों, आत्मनिर्भरता के ह्रास और समुदायों के सम्मान एवं एकजुटता, प्रकृति की लूट, पारंपरिक वातावरण से विस्थापन, बेरोजगारी, प्रकृति का विनाश, आत्मनिर्भर समुदायों से विस्थापन करते हुए नकद अर्थव्यवस्था में बदलाव, सांस्कृतिक जड़ों से उखाड़ और राजनीति में भ्रष्टाचार आदि के कारण ग्रामीण एवं स्लमों में रहने वाले गरीबों के जीवन पर प्रभाव के नजरिए से देखते हैं। उन समुदायों जिन्हें उस विकास के लाभार्थियों के रूप में प्रस्तुत किया जाता है, के उद्देश्यों एवं परिस्थितियों के साथ कोई सरोकार नहीं हैं।

वे व्यंग्य से समीक्षा करते हैं :

विकास एक अजीव परिभाषा है जिसे आजकल हाउसिंग प्रोजेक्ट, सोच प्रक्रिया के तर्कसंगत क्रम, बच्चे के मस्तिष्क के विकास या किशोरों के स्तनों के निर्माण के लिए इस्तेमाल किया गया। लेकिन विकास कम से कम एक चीज की ओर संकेत करता है, एक व्यक्ति की स्पष्ट अकथनीय, अशोभनीय स्थिति से पलायन की क्षमता, जिसे 'सबडेसारोल्लो' या अल्प विकास कहते है, जिसकी खोज हैरी ट्रूमैन ने 10 जनवरी 1949 को की थी।

जिस प्रकार से इस शब्द को स्वीकार्यता मिले, एसी शायद ही किसी को मिली हो और यह परिभाषा अदम्य अफसरशाही के लिए परिणामकारी बन गई।

एवं पुनः,

''एक ऐसे मार्ग की ओर बढ़ना जिसे दूसरे बेहतर जानते है, एक ऐसे लक्ष्य की ओर अग्रसर होना जो दूसरे पा चुके हैं, एकतरफा गली पर दौड़ का मतलब विकास माना जाने लगा। पर्यावरण, एकजुटता,

पारंपरिक मान्यताओं और रीति–रिवाजों का ह्रास और लगातार बदलती विशेषज्ञों की सलाहों को विकास कहते हैं, विकास लोगों को अमीरी का झांसा देते हुए बहुसंख्यकों के लिए उनकी गरीबी के निरंतर आधुनिकीकरण का नाम है।''

निष्कर्ष में ईवान इलिच कहते हैं, ''समय आ गया है कि विकास की एक घातक मिथक के रूप में पहचान हो, जिसकी प्रकृति उन सब लोगों के लिए खतरा है, जिसमें मैं मैक्सिकोवासी भी शामिल हूं। मैक्सिको का यह संकट हमें विकास को लक्ष्य के रूप में ध्वस्त करने हेतु सक्षम बनाता है।''

उनके कथन भविष्यवाणी थे, जो आने वाली घटनाओं से साबित हो गए।

'साउथ' दस्तावेज, जो डॉ. मनमोहन सिंह, जिसे उसके तुरंत बाद स्मृति भृंश का शिकार हो गये थे, की देखरेख में तैयार किया गया था, को चुनौती देते हुए नवीनतम प्रौद्योगिकी के बेरोजगारी की समस्या पर प्रभाव, यूरोपीय समुदाय की समिति की रिपोर्ट, चीन और जापान द्वारा अमरीका के कुछ कदमों पर प्रतिघात, जर्मन मजदूरों द्वारा 'सामाजिक धारा' के खिलाफ आंदोलन, अमरीका के साथ समझौते से बाहर आने की मांग के साथ फ्रांसीसी किसानों का विद्रोह, उत्तरी अमरीकी देशों द्वारा 'नाफ्टा' का विरोध और मैक्सिको के किसानों का इसके विरोध में सशस्त्र आंदोलन, जिस पार्टी की सरकार ने यह समझौता किया था उसका चुनावों में सफाया और नव नियुक्त प्रधानमंत्री का इस समझौते पर पुनर्वार्ता के लिए अमरीकी राष्ट्रपति क्लिंटन को पत्र लिखा जाना, अमरीका के उपभोक्ता आंदोलन के नेता मिस्टर नादिर और मजदूर नेताओं द्वारा चेतावनी, जनवरी 20–21 को डेनवर में आयोजित 'दी अदर इक्नॉमिक सम्मिट' का प्रस्ताव और नवंबर 3–4, 1997 को मलेशियाई प्रधानमंत्री मोहथिर मोहम्मद के सक्षम नेतृत्व में आयोजित क्वलालामपुर के जी–15 सम्मेलन में पारित प्रस्ताव ये सब इवान इलिच के विकास की अवधारणा के संदर्भ में लिये गये पक्ष को सही सिद्ध करते हैं।